

अछूत की शिकायत: दलित विमर्श का उद्घोष

प्राप्ति: 28.08.2026
स्वीकृत: 10.09.2026

63

डॉ० अनिल कुमार मिश्र

अध्यक्ष, सहायक प्राध्यापक

हिंदी विभाग, बाबा बरुआ दास पी.जी कॉलेज

परुडिया आश्रम, अंबेडकर नगर उ०प्र०

ईमेल: 72drakm@gmail.com

सारांश

अछूत की शिकायत कविता हीरा डोम द्वारा लिखी गई है। यह 1914 के सरस्वती पत्रिका के सितम्बर में पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा प्रकाशित हुई और 1977 में डॉ. राम विलास शर्मा जी द्वारा अपनी पुस्तक में उद्धृत करने के कारण आधुनिक काल में आलोचना और विवेचना के केन्द्र में है। दलित सभा के अनेक अध्ययता इसे दलित समाज के शोषण का दस्तावेज, शोषण के विरुद्ध आक्रोश का उद्घोष मानते हैं। इसमें हीरा डोम सदियों से हो रहे शोषण, ईश्वर की दलित के प्रति निष्ठुरता, साहब संभवतः अंग्रेज सरकार से फरियाद करने की बात करते हैं। वे हिन्दू समाज में अपने स्थान व सम्मान के संघर्षरत दलित समाज के सम्मुख ईसाई बनने के वैकल्पिक मार्ग की तरफ संकेत भी करते हैं, तो वहीं संस्कृति को छोड़ने के लिए अपने मन के अर्न्तद्वन्द्व को भी उजागर करते हैं। पानी की समस्या के बाद से मूलभूत सुविधाओं से सदियों से दलितों की वंचित स्थिति को समाज के सामने पहली बार लाते हैं। पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी "सरस्वती" में स्थान पाना हीरा के अग्रगामी और क्रांतिकारी चिंतन: परिणाम है। उन इस दूरदेशी चिंतन के प्रसारण के कार्य डॉ. राम विलास शर्मा ने आलेचन केन्द्र में रख कर। यद्यपि दलित विमर्श की परिधि में द्विवेदी और शर्मा अछूत जैसे ही हैं।

मुख्य शब्द

अछूत, सरस्वती, पादरी, आक्रोश, उद्घोष, नवजागरण, चेतना, विमर्श

हिंदी साहित्य में किसी दलित व्यक्ति की पहली रचना के रूप में हीरा डोम द्वारा लिखित कविता 'अछूत की शिकायत' का नाम ही उभरता है। यह कविता पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित पत्रिका 'सरस्वती' के सितम्बर, 1914, भाग-15, खंड-2 (पृष्ठ सं: 512-13) में प्रकाशित हुई। और इसे साहित्य और आधुनिक आलोचना जगत में प्रचलित और प्रतिष्ठित करने का दायित्व

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

डॉ० राम विलास शर्मा जी ने उठाया। उन्होंने इसे 1977 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नव जागरण' में इसे उद्धृत किया।¹ कवि हीरा डोम और उनकी कविता 'अछूत की शिकायत' को द्विवेदी जी जैसा संपादक व्यक्तित्व सरस्वती में स्थान देता है तो निश्चित ही यह हीरा डोम के उत्कृष्ट कवित्व और क्रांतिकारी, अग्रगामी सोच को तत्कालीन प्रखर और दूरंदेशी संपादक की भविष्यद्रष्टा दृष्टि की सजगता है, जिसने साहित्य जगत में इस कविता से नई साहित्यिक धारा के उद्भव की संभावना देखी होगी। वर्तमान विमर्श की कसौटी पर कसने पर यह कविता वास्तव में आधुनिक 'दलित विमर्श का उद्घोष' करती दिखती है। इस कविता में दलित विमर्श अपने समग्र रूप में है। जिसकी पहचान करते हुए सुप्रसिद्ध मराठी दलित साहित्यकार शरण कुमार लिंबाले कहते हैं—“इसे दलित सोच की वर्तमान धारा की पहली रचना कहा जा सकता है। चूँकि इसमें केवल दलितों की शिकायत या व्यथा ही दर्ज नहीं की गई बल्कि आक्रोश और विरोध भी जताया गया है।”² 'अछूत की शिकायत' में हीरा डोम ने आज के दलित चेतना के सभी बिंदुओं को अपनी अभिव्यक्ति के दायरे में रखा है। कविता प्रारम्भ होती है—“हमनी के राति दिन दुखवा भोगत बानी” पंक्ति से। जो दलित समाज के सदियों से हो रहे शोषण की अभिव्यक्ति है। 'पनहीं से पिटि पिटि हाथ गोड़ तुरि देहले' पंक्ति सदियों से दलितों को मिल रही शारीरिक यातना की गाथा है। इसके आगे वे किसी साहब के सामने अपनी विनती सुनाने की बात करते हैं। पर उनकी कविता का 'साहब' कौन है? वह ईश्वर तो हो नहीं सकते। क्यों कि आगे वे स्वयं को ईश्वर के विधान में अनदेखा किए जाने की बात करते हैं। ईश्वर की दीनानाथ छवि उनकी इस कविता में प्रश्नों के घेरे में है। हीरा डोम ईश्वर के दीनानाथ छवि को प्रतिष्ठित करने वाले मिथकी आख्यानों की सत्यता को परखने की कोशिश कर रहे हैं। खंभा फाड़कर प्रह्लाद को बचाने वाले, मगर के मुख्य से गजराज की रक्षा करने वाले, चीर बढ़ाकर द्रौपदी की लज्जा के रक्षक, पर्वत को कनिष्ठिका उँगली पर उठाने वाले ईश्वर को दलितों का कष्ट दिखाई नहीं देता। क्या वे इन्हें अछूत मान कर छूने से डरते हैं। उनकी यह उक्ति—

कँहवा सुतलबाटे, सुनत न बाटे अब,
डोम जानि हमनी के छुए से डेरइले।

ईश्वर के सम्मुख समानता सिद्ध करने वाली पंक्तियों—“जाति—पाँति पूछै नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई” को निरर्थक और मिथ्या सिद्ध करती है। हीरा डोम अपनी इस कविता में दो बिंदु रखते हैं—पहली, साहब के सामने अपनी फरियाद सुनाते हैं और ईश्वर की न्यायप्रियता को कटघरे में खड़ा करते हैं। प्रश्न उठता है जब ईश्वर उनके यहाँ प्रश्नचिह्नित है, तब उनका 'साहब' कौन है? ऐसा प्रतीत होता है कि हीरा डोम अपनी व अपने समाज (दलित समाज) की मुक्ति के लिए दैवीय शक्ति से सहायता की आशा छोड़ चुके हैं, उन्होंने इसके लिए मानवीय शक्ति की तरफ दृष्टि उठायी है, और वे संभवतः 'सहेबे' के रूप में भारतीय समाज के स्थान पर भारत में कानून की समानता स्थापित करने वाले अंग्रेज सरकार से दलित समाज के उद्धार की उम्मीद करते हैं।³ उनका साहब वास्तव में अंग्रेज सरकार ही है। क्यों कि अपने शोषण का दुख, साहब से विनती सुनाने की बात करने और ईश्वर द्वारा दलित समाज की अनदेखी की बात करने के बाद वे तुरंत पादरी के पास जाकर ईसाई बनने की बात करते हैं। धर्मांतरण उस समय से दलित समाज के सम्मुख शोषण और

सामाजिक अपमान से मुक्ति का एक सीधा और आकर्षक रास्ता रहा है। जो तत्कालीन, ब्रिटिश सरकार, ईसाई मिशनरीज का प्रमुख अभियान था, जिसे ईसाई समाज और मिशनरीज आज तक पोषित करते आ रहे हैं। यह कविता तत्कालीन ब्रिटिश सरकार द्वारा दलित समाज के उद्धार के लिए धर्मांतरण का पोषण करने की पुष्टि करती है। परंतु हीरा डोम के मन में इस धर्मांतरण प्रक्रिया में शामिल होने को लेकर घोर अन्तर्द्वन्द्व दिखाई पड़ता है।—

“हाय राम, धरम न छोड़त बनत बा जे,
बेधरम होके कैसे मुँहवा देखाइबि।”

जिस ईश्वर के ईश्वरत्व को उन्होंने कटघरे में खड़ा किया, उसी की दुहाई भी देते हैं। हीरा की ये पंक्तियाँ उनके अपनी सामाजिक—धार्मिक परम्परा के भारी मोह को भी रेखांकित करती हैं, भले ही वे उसमें अपमान और शोषण ही पाते रहे। हीरा डोम ईश्वर और परंपरागत समाज व्यवस्था को नकार कर दलितों पर दया न करने को ईश्वर को सर्वर्ण मानसिकता का ही सिद्ध करते हैं।⁴ दलितपन से मुक्ति के संदर्भ में तमाम संघर्षों के बाद दलितों के प्रेरणास्रोत डॉ० आम्बेडकर को भी धर्मांतरण का ही उपाय सूझा। परंतु धर्मांतरण के संबंध में अन्तर्द्वन्द्व हीरा डोम की तरह डॉ० आम्बेडकर के यहाँ भी दिखाई पड़ता है। उन्होंने 13 अक्टूबर, 1935 को महाराष्ट्र के नासिक जिले के येवला शहर में आयोजित दलित सम्मेलन में यह घोषण की कि—“मैं हिंदू के रूप में पैदा हुआ हूँ पर मैं निष्ठा के साथ कहता हूँ कि मैं हिंदू मरुंगा नहीं।” हीरा डोम जहाँ उहा—पोह की स्थिति में हैं, वहाँ डॉ० आम्बेडकर की दृष्टि अध्ययनों और अनेक धर्मों के अवलोकनोपरांत पूरी तरह साफ हो चुकी थी। यद्यपि इस स्थिति को साफ होने में लगभग तीस वर्षों का लंबा समय लग गया, और अपने लिए आयातित धार्मिक व्यवस्थाओं के स्थान पर अपनी भारतीय संस्कृति के ही अंग बौद्ध धर्म को चुनते हैं, और 14 अक्टूबर, 1956 को नागपुर के दीक्षाभूमि में बौद्ध धर्म अपना लेते हैं।

हीरा डोम ने दलित समाज की एक मूलभूत समस्या ‘पानी’ को भी अपनी कविता में उठाया है। वे हिंदी साहित्य में दलित समाज के लिए मूलभूत सुविधाओं विशेष रूप से पानी से वंचित किए जाने की समस्या को उठाने वाले पहले व्यक्ति हैं। यद्यपि बाद में पानी का यह मुद्दा साहित्य और स्वाधीनता आंदोलन के केन्द्र में हो गया। हीरा डोम अपनी कविता में लिखते हैं—

“हमनी के इनरा के निगिचे ज जाइले जा,
पांके में से भरि—भरि पियतानी पानी,
पनहीं से पिटि पिटि हाथ गोड़ तुरि दे लैं,
हमनी के इतनी के काही के हलकानी।”

हीरा डोम की ये पंक्तियाँ दलित समाज के लिए ‘पानी के मुद्दे’ को डॉ० आम्बेडकर से पहले समाज के सामने लाती हैं। जिसके लिए डॉ० आम्बेडकर ने 20 मार्च, 1927 को ‘महाड सत्याग्रह’ जिसे ‘चवदार तालाब सत्याग्रह’ भी कहा जाता है, जैसे बड़े आंदोलन की शुरुआत की, जो कुछ ही वर्षों में देशव्यापी हो गया। बाद में पानी की इसी समस्या को लेकर प्रेमचंद ने 1932 में अपनी कालजयी कहानी ‘ठाकुर का कुँआ’ लिखा, जिसमें दलित समाज का प्रतिनिधि उसका नायक जोखू अंत में गंदा पानी ही पीता है। निराला के उपन्यास निरुपमा में भी नायक कृष्ण कुमार मिश्र के परिवार के लिए

ब्राह्मण समाज का कुँआ उसके द्वारा जूता पॉलिश करने का धंधा अपनाने और विदेश जाने से निषिद्ध हो गया।⁵

इस प्रकार हम देखते हैं कि हीरा डोम हिंदी साहित्य जगत में पहले व्यक्ति हैं जो सदियों से दलितों की स्थिति को अपनी भाषा भोजपुरी में समाज के सम्मुख रखते हैं। उनकी यह कविता शोषण, दमन, जीवन के मूलभूत अधिकारों से वंचित होने और उससे निकलने की छटपटाहट के उपाय तलाश की कविता है। जिसके लिए आज दलित आंदोलन कार्यरत है। दलित विमर्श के इस प्रथम उद्घोष को संरक्षित करने के लिए पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनकी दूरदेशी दृष्टि का संपूर्ण साहित्य जगत सदैव आभारी रहेगा, जिससे दलित साहित्य का यह अनमोल हीरा आज हमारे पास है। यद्यपि दलित लेखक समूह द्विवेदी और डॉ० राम विलास शर्मा जी को कटघरे में ही खड़ा करता है।

संदर्भ

1. wikipedia.org-24.08.2026
2. शरण कुमार लिंबाले, दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पेपर बैक संस्करण-2016, पृ०सं०-17
3. डॉ० अनिल कुमार मिश्र, भारतीय वाङ्मय और दलित चेतना, प्रकाशक-कलमकार पब्लिशर्स प्रा० लि०, नई दिल्ली, संस्करण- 2022, पृ०सं०-141
4. डॉ० अनिल कुमार मिश्र, भारतीय वाङ्मय और दलित चेतना, प्रकाशक-कलमकार पब्लिशर्स प्रा० लि०, नई दिल्ली, संस्करण- 2022, पृ०सं०-141
5. डॉ० अनिल कुमार मिश्र, भारतीय वाङ्मय और दलित चेतना, प्रकाशक-कलमकार पब्लिशर्स प्रा० लि०, नई दिल्ली, संस्करण- 2022, पृ०सं०-141